ओ३म्

...क ईश्वरवाद और ...निक विज्ञान

प्रणेता:—

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड

(आचार्य—सार्वभौम वैदिक परिवार संघ, मथुरा.)

प्रकाशक

सत्य प्रकाशन

वृन्दावन मार्ग, मथुरा ।

मूल्य १) ... पैसे

ओ३म्

वैदिक ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान

प्रणेता :
श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड
(आचार्य—सार्वभौम वैदिक परिवार संघ, मथुरा.)

सम्पादक :
श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' एम० ए०
साहित्य रत्न, सि० शास्त्री
[सम्पादक 'तपोभूमि']

प्रकाशक :
सत्य प्रकाशन
वृन्दावन मार्ग, मथुरा

मूल्य)५० पैसे

वैदिक धर्म अतिवादी नहीं, समन्वयवादी है। पवित्र वेदों में प्रेय-श्रेय, लोक-परलोक, व्यष्टि-समष्टि, श्रद्धा-मेधा, आध्यात्मिकता-भौतिकता, ज्ञान-विज्ञान अथवा विज्ञान और आस्तिकता, इसी प्रकार ज्ञान-कर्म-उपासना एवं सत्यं शिवं सुदरम् का सुखद समन्वय है।

प्रकट है कि वैदिक काल में भौतिक विज्ञान और ईश्वरवाद (आस्तिकता) में सहचार था। वे एक दूसरे के पूरक और पोषक थे। वैदिक युग के इतिहास ग्रन्थ रामायण में अयोध्यादि नगरों के निर्माण, पुष्पक विमान आदि जैसे विशाल वायुयान तथा आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, ब्रह्मास्त्र जैसे युद्धोपकरण उस समय के भौतिक विज्ञान के चरम उत्कर्ष की कहानी कहते हैं। पर विज्ञान का यह उत्कर्ष अध्यात्म—आस्तिकता या ईश्वरवाद से नियन्त्रित था। रावण ने जब भौतिक विजयों—विज्ञान की विविध उपलब्धियों के उन्माद में 'ईश्वरवाद' और आस्तिकता के व्यावहारिक पहलू मानवता की अवहेलना की तो उसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम से पराभूत होना पड़ा। लङ्का पर फिर वैदिक संस्कृति आस्तिकतामय विज्ञान अथवा विज्ञानमय आस्तिकता) का झण्डा फहराने लगा।

युगों-युगों तक संसार के मानव-प्राणी भौतिक विज्ञान के विकास द्वारा शारीरिक सुख और अध्यात्म-साधना (सच्ची वैदिक ईश्वर भक्ति) द्वारा आत्मिक शान्ति का आनन्द लेते रहे। पर समय तो सदैव एक-सा नहीं रहता। काल चक्र के प्रवाह क्रम में 'महाभारत काल' आया। अध्यात्म पक्ष शिथिल होगया। मानवता कहीं छिप-सी गई। भौतिक विभव की उपलब्धि ही जैसे जीवन-लक्ष्य बन गया। परिणाम—राम-भरत जैसे भाइयों के आदर्श के स्थान पर भाई-भाई के बीच विग्रह का ताण्डव हो उठा। महाभारत युद्ध में भौतिक विभव और आत्म सम्पदा जैसे सब कुछ स्वाहा होगया।

और तब आया अन्धकार युग। ज्ञान-सूर्य का सर्वथा लोप

हो गया। बुद्धि, विज्ञान और तर्क से किसी का कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। वेद सूर्य के लुप्तप्राय होते ही मत-पन्थों के अनेक मानव निर्मित दीप जल उठे। 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' का युग था यह। जादूगरी, चमत्कारवाद का बोलबाला हो उठा। वेद, यज्ञ और योग तथा मन्त्र-तन्त्र के नाम पर अनेक अनर्थों की सृष्टि हुई। रूढ़िवाद और अन्धविश्वास ही धर्म का पर्याय हो गया। एक ईश्वर की जगह अनेक मानव कल्पित ईश्वर, एक धर्म की जगह अनेक मत-पन्थ, एक गुरुमन्त्र की जगह अनेक गुरुमन्त्र और एक धर्मग्रन्थ की जगह—जिन्दावस्ता, पुराण, कुरान-बाइबिल आदि अनेक मानव निर्मित भ्रम भरे ग्रन्थ धर्म-ग्रन्थ बन बैठें।

समय ने फिर करवट बदली। इस बार यूरोप में विज्ञान ने आँखें खोलीं। आधुनिक विज्ञान निस्सन्देह पश्चिम की देन है। वैज्ञानिक शोधों के इस पुण्य प्रकाश को मत पन्थ रूपी अँधियारी सह नहीं सकी। विज्ञान की प्रगति के मूल बुद्धिवाद और तर्कना शक्ति का वायु वेग मत-पन्थों के दीपकों के लिये असह्य हो उठा। बाइबिल कहती थी पृथ्वी चटाई की तरह चपटी है, वैज्ञानिक कहता था पृथ्वी गोल है। बाइबिल कहती थी ६ दिन के बाद सूरज बना। वैज्ञानिक का प्रश्न था—जब सूरज ही नहीं था तो दिनों की गणना किस प्रकार हुई? बस मतान्ध पोप पादरियों ने न जाने कितने ऋषि तुल्य वैज्ञानिकों को जीवित जला दिया। प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। आरम्भ के वैज्ञानिकों ने भी धर्म और ईश्वरवाद को विज्ञान का विरोधी मान लिया। फिर क्या था तथाकथित धर्म—आस्तिकता अथवा ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान को नव शिक्षितों और विज्ञान के विद्यार्थियों के निकट प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्रस्तुत किया गया। पर वेद माता स्पष्ट निर्देश करती है:—

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।

अर्थात् विष्णु के कर्मों को देखो। सृष्टि के रहस्यों को जानो, शोधें करो, वैज्ञानिक अनुसन्धान करो। ऐसा करने से सर्वत्र 'व्रतानि—

नियमों का, दृढ़ बन्धन या व्यवस्था का अनुभव होने से उस नियामक

इन्द्र से सच्ची मित्रता होगी। उसमें श्रद्धा जगेगी।

और विज्ञान ने ज्यों-ज्यों चरण आगे बढ़ाये, वैज्ञानिक ने प्रत्यक्ष किया कि सम्पूर्ण सृष्टि के सञ्चालन में कुछ नियम काम कर रहे हैं, वैज्ञानिक शोधें भी उन्हीं निश्चित् नियमों के सहारे आगे बढ़ती हैं। वैज्ञानिक ने प्रत्यक्ष देखा कि सृष्टि-सञ्चालन में एक व्यवस्था है। और जब नियम हैं, व्यवस्था है तो नियामक या व्यवस्थापक होना ही चाहिये। उसका नाम भले ही आप 'नेचर' कहें। पर यह नियामक और व्यवस्थापक चेतन सत्ता है, जड़ प्रकृति नहीं। वैज्ञानिक ने इसे देखा, समझा और स्वीकारा।

इधर महान् क्रान्तदर्शी आचार्य स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के सत्प्रयास से मतवादों की कल्पना से सर्वथा भिन्न वैदिक ईश्वरवाद का विराट् स्वरूप प्रकाश में आया तो आज के मनीषी वैज्ञानिक ने पुनः पुराकाल के वैज्ञानिकों की भाँति ईश्वर के अस्तित्व में अपनी गहन आस्था प्रकट की है। यह ठीक है कि आधुनिक वैज्ञानिक द्वारा स्वीकृत ईश्वर का स्वरूप मतवादियों द्वारा कल्पित मानववत् ईश्वर नहीं, वरन् वह पवित्र वेदों द्वारा प्रतिपादित—एक, अज, अद्वितीय, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी और सच्चिदानन्द स्वरूप है। उस महान् की सत्ता जीवसे भिन्न है, वह नित्य पवित्र, सृष्टिकर्त्ता-हर्त्ता और भर्त्ता है।

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् श्रद्धेय पं० धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड ने "वैदिक ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान" में ईश्वर के वैदिक स्वरूप का विवेचन करते हुए बताया है कि किस प्रकार उच्चकोटि के वैज्ञानिकों ने मुक्त कण्ठ से वैदिक ईश्वरवाद का समर्थन किया है। आशा है इस सत्प्रयास से हमारी नव शिक्षित युवा पीढ़ी विशेषतः विज्ञान के विद्यार्थी नास्तिकता के पाप से बच, आत्म कल्याण की राह पर बढ़ेगें। —ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम'

भूमिका

सब धर्म प्रेमी सज्जनों को यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि प्रिय भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् इस धर्म प्रधान देश में कम्यूनिज्म समाजवाद तथा विज्ञान के नाम पर अनीश्वरवाद और नास्तिकता का प्रचार बढ़ता जा रहा है, जिसका भयङ्कर प्रभाव युवक युवतियों के ऊपर अनाचार, चरित्रभ्रष्टता, अनैतिकता आदि की वृद्धि के रूप में हो रहा है। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिये सब सुशिक्षित आस्तिकों को अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिये।

हमारे छात्र-छात्राओं को प्रायः यह बतलाया जाता है कि सभी वैज्ञानिक अनीश्वरवादी और नास्तिक थे अतः विज्ञान के इस युग में जगत्कर्ता ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना भी एक अन्धविश्वास है। इस विषय में कतिपय पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वार्थवश बड़े भ्रान्त विचार फैला रखे हैं और छात्रों को इतिहासादि की पुस्तकों द्वारा वे भ्रान्त विचार दिये जाते हैं। इस छोटी सी पुस्तिका में वैदिक ईश्वरवाद पर सप्रमाण प्रकाश डालते हुए यह दिखाया गया है कि वैदिक धर्म एकेश्वरवादी है जो एक, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान जगत्कर्ता परमेश्वर की उपासना का प्रतिपादन करता है। और वर्तमान विज्ञान के पिता के नाम से प्रसिद्ध सरआइजक न्यूटन, लौर्ड केल्विन, सरआलीवरलॉज, थौमस ऐडीसन, जगद्विख्यात मनीषी आइन्स्टीन, फ्लेमिंग आदि बड़े २ वैज्ञानिकों ने जगत्कर्ता ईश्वर की सत्ता का स्पष्ट समर्थन किया है। जिनवैज्ञानिकों ने ईश्वर की सत्ताका निराकरण किया उन्होंने बाइबल, कुरान आदि में प्रतिपादित ईश्वर की मानवत् कल्पना (Anthromophic Conception of God)का किया है, ईश्वर की युक्ति-युक्ति [illegible] मात्र का नहीं। आशा है इस सत्य के प्रचार द्वारा शिक्षित युवक-युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता की निन्दनोय प्रवृत्ति को रोकने में सहायता मिलेगी तथा उन्हें वैदिक ईश्वरवाद का शुद्ध रूप में ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

ओ३म्
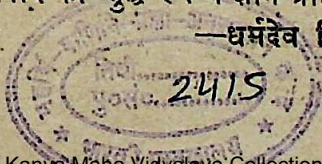
वैदिक ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान

वेदों का निष्पक्ष होकर यदि अनुशीलन करें तो हमें स्पष्ट ज्ञात होता है कि वेद ईश्वर के जिस स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं वह सर्वथा विज्ञान-सम्मत, बुद्धि-सङ्गत और तर्कानुमोदित है। ईश्वर एक है, अनेक नहीं। वह सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, निर्विकार, अजन्मा, अविनाशी, न्यायकारी, दयालु जगत् का कर्त्ता-धर्त्ता संहर्ता है। यह ईश्वर का वैदिक स्वरूप है।

वेदों से इतर अन्य पुराणादि ग्रन्थों में एक ईश्वर के स्थान पर बहुदेवतावाद का उल्लेख है। यह बहुदेवतावाद विज्ञान को मान्य नहीं हो सकता। वेदों के अनेकों मन्त्रों में बतलाया है कि ईश्वर एक है, जिनमें से विस्तार भय से केवल कुछ ही मन्त्रों का निर्देश यहाँ किया जाता है—

वैदिक एकेश्वरवाद

य एक इत् तमुष्टु हि कृष्टीनाँ विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥

—ऋ० ६। ५१।१६

इस मन्त्र में स्पष्ट उपदेश है कि हे मनुष्य! (यः) जो (एकः इत्) एक ही (कृष्टीनाँ विचर्षणिः) सब मनुष्यों का ठीक-ठीक देखने वाला सर्वज्ञ (वृषक्रतुः) सुखों की वर्षा करने वाले कर्म वा ज्ञान वाला सर्वशक्तिमान् (पतिः जज्ञे) सबका स्वामी है। (तम् उ स्तुहि) तू सदा उसकी स्तुति कर।

'एकः इत्' इन शब्दों से एक परमेश्वर की ही स्तुति और पूजा का भाव अत्यन्त स्पष्ट है।

ऋग्वेद ८। १।१ में कहा है—

मा चिदन्यद् विशंसत सखा मा रिषण्यत।
इन्द्रमित् स्तोतावृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥

हे (सखायः) मित्रो ! (मा चिद् अन्यद् विशंसत) तुम किसी अन्य की विशेष स्तुति अर्थात् प्रार्थना उपासना न करो और इस प्रकार अन्य की स्तुति प्रार्थना करके (मा रिषण्यत) मत दुःख उठाओ। सदा एकान्त में और (सचासुते) मिलकर किये हुए यज्ञों में (वृषणम्) सुख, शान्ति और आनन्द की वर्षा करने वाले (इन्द्रम् इत्) एक परमेश्वर की ही (स्तोत) स्तुति करो (च) और (मुहुः) बार-बार उसी के (उक्था शंसत) स्तुति वचनों का उच्चारण करो।

कितने स्पष्ट शब्दों में इस मन्त्र में एक परमेश्वर की ही, जो सुख-शान्ति आनन्द का वर्षक है स्तुति-प्रार्थना तथा उपासना करने का विधान करते हुए, अन्यों की स्तुति का निषेध किया गया है, और इसे दुःखों का कारण बताया गया है। इस बात को पाठक ध्यान से देखें। 'इदि परमैश्वर्ये' धातु से इन्द्र शब्द बनता है। अतः उसका अर्थ परमेश्वर है, इसमें सन्देह का कारण ही नहीं। श्री सायणाचार्यादि पौराणिक भाष्यकारों को भी बहुत स्थानों पर इन्द्र का परमेश्वर यही अर्थ करने को विवश होना पड़ा है। उदाहरणार्थ—

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥

सामवेद के इस मन्त्र के भाष्य में सायणाचार्य ने लिखा है— "(इन्द्र) अनेक गुणविशिष्ट परमात्मन्।"

इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि शब्दों को देख कर कई लोग भ्रम में पड़ जाते हैं और समझने लगते हैं कि वेद अनेकेश्वरवाद के समर्थक हैं। किन्तु वेदों के निष्पक्षपात अनुशीलन से यह भ्रम सर्वथा दूर हो जाता है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में ही यह स्पष्टतया बताया है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

—ऋ० १।१६४।४६

अर्थात् (विप्राः) विद्वान् ज्ञानी लोग (एकंसद्)एक ही सत्स्वरूप परमेश्वर के विविध गुणों को प्रकट करने के लिए इन्द्र, मित्र, वरुण आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। परमैश्वर्य सम्पन्न होने से उस परमेश्वर को इन्द्र, सबका स्नेही होने से मित्र, सर्वश्रेष्ठ और अज्ञानान्धकार निवारक होने से, (वरणीयः, अज्ञानान्धकारनिवारको वा) वरुण, ज्ञानस्वरूप और सबका अग्रणी नेता होने से अग्नि (अञ्चु-गति पूजनयोः), सबका नियामक होने से यम, आकाश या जीवादि में अन्तर्यामिरूपेण व्यापक होने के कारण मातरिश्वा आदि नामों से उस एक की ही स्तुति की जाती है।

यूरप के एक सुप्रसिद्ध विद्वान् विचारक श्री अर्नेस्ट वुड् ने 'An English man defends Mother India' नामक अपनी पुस्तक में इस मन्त्र का अनुवाद देते हुए यह टिप्पणी की है—

In the eye of the Hindus, there is but one Supreme God-This was stated long ago in the Rigveda, in the following words:— 'Ekam Sad vipraa bahudhaa vadanti' which may be translated: "The sages name the One Being variously".

अर्थात् हिन्दुओं की दृष्टि में एक ही परमेश्वर है। इस सत्य का प्रतिपादन बहुत प्राचीनकाल में ऋग्वेद में "एकंसद्विप्राः बहुधा वदन्ति" इन शब्दों द्वारा किया गया था, जिनमें स्पष्टतया बताया गया है कि—'ज्ञानी एक ही परमेश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं।'

यूरप के संस्कृतज्ञों में अपने समय में सबसे अधिक सुप्रसिद्ध प्रो० मैक्समूलर को भी जिन्होंने अपने पहले ग्रन्थों में वेदों को हीनोथीइज्म अथवा अति-स्तुति देवतावाद का प्रतिपादक बताने का प्रयत्न किया था यह बात अपने अन्तिम ग्रन्थ The Six Systems of Philosophy में जो महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य - भूमिका के पढ़ने के बाद लिखा गया था, स्वीकार करनी पड़ी कि वेदों में

इन्द्र, मित्र, अग्नि, वरुण, मातरिश्वा, प्रजापति इत्यादि शब्दों द्वारा वस्तुतः एक ही ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है, जो अनन्त और निर्विकार है।

प्रो० मैक्समूलर तथा यूरप के कई अन्य विद्वान् इसप्रकार स्पष्ट एकेश्वरवाद प्रतिपादक वेदमन्त्रों को ईसाइयत अथवा विकासवाद के पक्षपात के कारण पीछे की रचना बताने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यह उनकी मनघड़न्त कल्पना है, जो सर्वथा निराधार है। इस पक्षपात का स्पष्ट प्रमाण प्रो० मैक्समूलर के Vedic Hymns नामक ग्रन्थ के निम्नलिखित लेख से मिलता है। यहाँ हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ० १०। १२१) का अनुवाद करते हुए जिसमें—

'हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ॥
यो देवेष्वधिदेव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ।
ततो देवानाँ समवर्त्ततासुरेकः कस्मैदेवाय हविषा विधेम ॥

इत्यादि मन्त्रों में अत्यन्त स्पष्ट और प्रबल शब्दों में एकेश्वर-वाद का प्रतिपादन है। जैसा कि स्वयं प्रो०मैक्समूलर ने 'History of Ancient Sanskrit Literature' में लिखा है:—

'I add only one more hymn (Rig 10.121) in which the idea of one God is exrpessed with such power and decision that it will make us hesitate before we deny to the Aryans an instinctive monotheism.'

अर्थात् मैं एक और सूक्त (ऋ० १०। १२१) का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसमें एक ईश्वर का भाव इतनी प्रबलता और स्पष्टता के साथ प्रकट किया है कि हमें अत्यन्त संकोच करना पड़ेगा पूर्व इसके कि हम आर्यों के एक नैसर्गिक एकेश्वरवाद से इन्कार करें।

इत्यादि शब्दों द्वारा स्वीकार करके भी स्वार्थ और पक्षपातवश वे टिप्पणी चढ़ाते हैं:—

'This is one of the hymns which has always bean suspected as modern by European interpreters. (Vedic Hymns p.3)

अर्थात् यह उन सूक्तों में से है जिन पर यूरोपीय भाष्यकारों ने सदा नवीन होने का सन्देह किया है।

'प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।'

—ऋ० १०।१२।१०

इस मन्त्र पर प्रो० मैक्समूलर टिप्पणी चढ़ाते हैं—

"This last verse is to my mind the most suspicious of all"

अर्थात् यह अन्तिम मन्त्र जिसमें परमेश्वर को सम्बोधन करते हुए कहा गया है कि तुम्हें छोड़कर अन्य कोई भी इस सारे जगत् में व्यापक और इसका स्वामी नहीं है, मेरी सम्मति में सबसे अधिक संदेहास्पद है।

यह सन्देह इसलिए किया गया है कि ईसाइयत के पक्षपात के कारण प्रबल प्रमाण होते हुए भी, ये लोग इस बात को मानने में संकोच करते हैं, और इसके लिए उद्यत नहीं होते कि वेदों में एकेश्वरवाद की उच्च शिक्षा पाई जाती है।

ऋ० ६।२२।१ में कितनी स्पष्टता से एक सर्वव्यापक सर्वज्ञ परमेश्वर की स्तुति और उपासना का विधान है इसको देखिए—

य एक इद् हव्यश्चर्षणीनाम् इन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्॥

अर्थात् (यः) जो (इन्द्रः) परमेश्वर (चर्षणीनाम्) सब मनुष्यों का (एकःइत्) एक ही (हव्यः) पूजनीय है, (तम्) उसकी (आभिगीर्भिः) इन वाणियों से (अभी-अर्च) चारों ओर से प्रेम पूर्वक पूजा कर। (यः) जो (वृषभः) सुख शान्ति आनन्दवर्षक (वृष्ण्या वान्) सर्वशक्तिमान् (सत्यः) सत्य स्वरूप (सत्वा पुरुमायः सहस्वान् पत्यते) अत्यधिक बुद्धिशाली-सर्वज्ञ तथा सब प्रकार के बल से सम्पन्न होने के कारण सबको पराजित करने वाला सारे जगत् का स्वामी है। वही परमेश्वर एकमात्र पूजनीय है।

इस प्रकार मन्त्र में परमेश्वर को सर्व व्यापक, सर्व ज्ञ सर्व शक्ति-मान् सारे जगत् का स्वामी बताते हुए उसकी मानस पूजा का विधान किया गया है। इससे स्पष्ट एकेश्वरवाद का प्रतिपादन क्या कहीं हो सकता है, इसे निष्पक्ष पाठक विचारें।

ऋ० १०।८२ में एकेश्वरवाद का स्पष्ट प्रतिपादन सभी मन्त्रों में विश्वकर्मा अथवा जगत्कर्ता के नाम से परमेश्वर का स्मरण करते हुए किया गया गया है।

मन्त्र २ में विश्वकर्मा अर्थात् जगत्कर्त्ता परमेश्वर के गुणों का निम्न प्रकार वर्णन करते हुए इसके एक होने का प्रतिपादन है।

विश्वकर्मा विमना आद् विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक्।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्त ऋषीन् पर एकमाहुः॥
ऋ० १०।८२।२

इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि वह (विश्वकर्मा) जगत्कर्ता परमेश्वर (विमना आत् विहायाः) विविध मनों का स्वामी, आकाश के तुल्य व्यापक (धाता) संसार का धारण करने वाला, (विधाता) विशेष रूप से सूर्य चन्द्र तथा लोक-लोकान्तरों का धारण और पोषण करने वाला, (परमः) अत्यन्त उत्कृष्ट, (उत्) और (संदृक्) सर्वज्ञ है, (यत्र) जिस प्रकार परमेश्वर के विषय में विद्वान् (आहुः) कहते हैं कि (सप्त ऋषीन् परे) वह सात इन्द्रियों से परे (एकम्) एक ही है, और (यत्र) जिस परमेश्वर के आश्रय में (तेषाम्) उन इन्द्रियादि के (इष्टानि) अभिलषित सर्व भोग्य पदार्थ (इषा) उस प्रभु की प्रेरक शक्ति से (संमदन्ति) भली प्रकार हर्ष के कारण बनते हैं।

यहाँ ईश्वर के जगत्कर्ता धर्ता और सर्वज्ञ होने का प्रतिपादन करते हुए उसे इन्द्रियातीत और एक ही बताया है। यह अति स्पष्ट है जिसमें सन्देह का अणु मात्र भी कारण नहीं।

इस सूक्त का म० ३ तो इस प्रकरण में अत्यधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है जिसमें परमेश्वर को एक और देवों के सब नामों

को धारण करने वाला बताया गया है। मन्त्र इस प्रकार है:—

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या॥
—ऋ० १०।८२।३, यजु० १७।२७, अथर्व० २।२।३

अर्थात् (यः नः पिता) जो परमेश्वर हमारा पालक है,(जनिता) उत्पादक है, और (यः) जो (विधाता) विशेष रूप से हमारा धारण करने वाला, और(विश्वा धामानि)सब स्थानों लोकों और(भुवनानि) उत्पन्न पदार्थों को (वेद) जानता है, (यः देवानां नामधा एकः एव) जो सब देवों इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम इत्यादि के नाम को प्रधानतया धारण करने वाला एक ही देव है (तम्) उस (संप्रश्नम्) अच्छी प्रकार से जानने योग्य परमेश्वर की ओर ही (अन्य भुवना) अन्य सब लोक और प्राणी (यन्ति) गति कर रहे हैं।

यहाँ परमेश्वर को पालक, उत्पादक, पिता, सर्वज्ञ, सर्वधारक बताते हुए स्पष्ट कहा है कि वह एक ही है जिसके अनेक गुणानुसार अनेक नाम हैं। अर्थात् अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, रुद्रादि नाम प्रधानतया उस एक गुणसमुद्र परमेश्वर के हैं, गौण रूप से अन्यों के हैं। इससे बढ़कर एकेश्वरवाद का प्रतिपादन और अनेकेश्वरवाद का निराकरण और क्या हो सकता है ?

सोऽर्यमा स वरुणः स महादेवः।
सोऽग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः॥ अथर्व० १३।४।४।५

इस मन्त्र में भी कहा गया है कि वही परमात्मा अर्यमा, वरुण, रुद्र, महादेव, अग्नि, सूर्य, महायम् इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। वह एक परमात्मा ही नमस्कार करने के योग्य है इस बात को—

"दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिः एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः।
तं त्वा यामि ब्रह्मणा दिव्य देव नमस्ते अस्तु दिवि ते सधस्थम्॥
अथर्व० २।२।१

मृडाद् गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिः, एक एव नमस्यः सुशेवाः ।
अथर्व० २।२।२

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते ।
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते स एष एक वृदेक एव ।।
अथर्व० १३।४।२०

इत्यादि में भी स्पष्टतया बताया गया है—

'एक एव नमस्यः विक्षु ईड्यः' 'एक एव नमस्यः सुशेवाः।'

ये शब्द स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं जिनसे जीवेश्वर भेद भी स्पष्ट है। इनमें कहा गया है कि वह 'एकः एव नमस्यः' एक परमात्मा ही नमस्कार के योग्य है। वह 'विक्षुईड्यः' सारी प्रजाओं में पूजनीय है क्योंकि वह 'सुशेवाः' अर्थात् उत्तम सुखदाता है। वही 'भुवनस्य पतिः'—सारे संसार का स्वामी और रक्षक है। वह परमात्मा एक ही है—दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस परमेश्वर नहीं। (एकः) एक है, (एक वृत्) एक होकर वह सर्वव्यापक है, (एकः एव) वह एक ही है। इससे अधिक स्पष्ट एकेश्वरवाद का प्रतिपादन और क्या हो सकता है ?

वैदिक ईश्वर का स्वरूप

यदि वैदिक ईश्वरवाद के विषय में कोई एक ही मन्त्र उद्धृत करना हो जिसमें सागर को गागर में भर दिया गया है तो वह निःसन्देह यजु० ४०।८ है, जहाँ—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।।

इन शब्दों द्वारा बताया गया है कि ज्ञानी उस परमेश्वर को प्राप्त करता है जो सर्वशक्तिमय, सर्वथा शरीर रहित, नसनाड़ी के बन्धन से रहित, निराकार, निर्विकार, शुद्ध, पवित्र तथा सर्वथा पाप-रहित है। वह सर्वज्ञ, मन का भी साक्षी, सर्वव्यापक स्वयम्भू है जो

(शाश्वतीभ्यः समाभ्यः) अनादि जीवरूप प्रजाओं के कल्याणार्थ (याथातथ्यतः) यथार्थ रूप से सब पदार्थों को बनाता और वेद द्वारा उनका उपदेश करता है। यहाँ 'शाश्वतीभ्यः समाभ्यः' इन शब्दों से अनादि नित्य जीवों की सत्ता और 'याथातथ्यतः अर्थात् व्यदधात्' से जगत् की यथार्थता भी स्पष्ट है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' इस अद्वैत-वेदान्तानुसार जगत् का मिथ्यात्व वेद को मान्य नहीं है।

जीवेश्वर भेद का अत्यन्त स्पष्ट प्रतिपादन

वेदों में जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन सैकड़ों मन्त्रों में है, क्योंकि इस बात को सभी जानते हैं कि वेदों में अधिकतर मन्त्र प्रार्थना के हैं और प्रार्थना उपास्य-उपासक, सेव्य-सेवक, पिता-पुत्र आदि का भेद मान कर ही सम्भव है। तथापि लेख के विस्तारभय से अभी निम्नलिखित अति स्पष्ट मन्त्रों का निर्देश मात्र ही पर्याप्त है जिनके अर्थ के विषय में भी सन्देह का अवकाश नहीं यदि निष्पक्षपात दृष्टि से विचार किया जाय।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

ऋ० १।१६४।२०

इस मन्त्र में जीवात्मा और परमात्मा की दो पक्षियों से उपमा देते हुए, जो दोनों चेतन और नित्य होने के कारण सहयोगी मित्र के समान होते हुए, नित्यता की दृष्टि से समान प्रकृति-रूप-वृक्ष पर बैठते हैं, यह कहा है कि (तयोः) उन दोनों में से एक कर्मानुसार (स्वादु पिप्पलम्) स्वादु वा अस्वादु फल का भोग करता है, और (अन्यः) दूसरा कर्मफल का भोग न करता हुआ (अभि चाकशीति) सर्वज्ञ साक्षी बनकर जीवकृत कर्मों को चारों ओर से देखता है। इस प्रकार मन्त्र के शब्दों से जीवात्मा और परमात्मा का भेद स्पष्ट है।

[२] निम्न ऋग्वेद १०।८२।७ के मन्त्र में जीवेश्वर भेद का अति स्पष्ट प्रतिपादन है—

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद् युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥

अर्थात् हे जीवो! तुम उस परमात्मा को नहीं जानते जिसने इन सब पदार्थों को उत्पन्न किया है। वह ब्रह्म तुम जीवों से (अन्यत्) भिन्न, किन्तु साथ ही (युष्माकम् अन्तरं बभूव) तुम्हारे अन्दर विद्यमान है। तुम अज्ञानान्धकार से आवृत, स्वार्थी तथा कपटी दम्भी होने के कारण उस सर्वव्यापक ब्रह्म को नहीं जानते,ऐसा मन्त्र के उत्तरार्ध में कहा गया है। इस प्रकार परमेश्वर का जीवों से और सांसारिक पदार्थों से (जिनका वह परमेश्वर उत्पादक है) भेद मन्त्र में स्पष्टतया निरूपित किया है। यही मन्त्र यजुर्वेद १७।३१ में भी पाया जाता है।

'य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम्।
य आत्मनि तिष्ठन्नन्तरोयमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः ॥

इत्यादि वचन इस मन्त्र के व्याख्यान रूप प्रतीत होतेहैं, जिनमें कहा गया है कि जो परमात्मा आत्मा के अन्दर रहता हुआ भी आत्मा से भिन्न है, जिसको अज्ञानी-आत्मा नहीं जानता, आत्मा जिसके निवासार्थ मानो शरीर रूप है, जो आत्मा में स्थित होकर सबको वश में रखता है, हे गार्गि! वह तुम्हारा अन्तर्यामी अविनाशी परम आत्मा है। इस मन्त्र के अर्थ में श्री सायणाचार्य, उव्वट महीधरादि अद्वैतवादी आचार्यों को बड़ी खैंचातानी इसकोजैसे-तैसे करके अद्वैतवाद समर्थक बताने के लिये करनी पड़ी है।

[३] ऋ० ८।९६।९ का निम्न मन्त्र भी जीव, ईश्वर और प्रकृति तथा प्रकृति से उत्पन्न जगत् के भेद को स्पष्टतया बताता है—

तमु ष्टुवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात्।
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम ॥

इस मन्त्र में कहा गया है कि हम (तम् उ स्तवाम) उस ईश्वर की स्तुति करें (यः इमा जजान) जिसने इन सब सूर्यादि पदार्थों को बनाया है, (विश्वा जातानि अवराणि अस्मात्) ये उत्पन्न सब पदार्थ इस परमेश्वर की अपेक्षा बहुत ही हीन हैं। (इन्द्रेण)

आत्मा के द्वारा हम (मित्रेण विधेम) सबके सच्चे मित्र परमेश्वर का ध्यान करें, (नमोभिः गीर्भिः) नमस्कार युक्त वाणियों से (वृषभम्) सुखों के वर्धक परमात्मा के (उपविशेम) समीप बैठ जायें, उसकी सच्ची उपासना करें। इस मन्त्र द्वारा ब्रह्म, जीव और जगत् का भेद अत्यन्त स्पष्ट है।

[४] ऋ० ८।६५।३ के निम्न मन्त्र में परमेश्वर को जीवरूप सनातन प्रजाओं का स्वामी बताया गया है जो उनके परस्पर भेद को स्पष्ट सिद्ध करता है।

त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि

अर्थात् हे परमेश्वर (त्वं हि) तू ही निश्चय से (शश्वतीनां प्रजानाम्) जीवरूप नित्य प्रजाओं का (पतिः असि) स्वामी है।

[५] निम्न सुप्रसिद्ध मन्त्र भी जीवेश्वर भेद को अत्यन्तस्पष्ट-तया प्रमाणित करता है जहाँ भगवान् से प्रार्थना की गई है कि—

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥

ऋग्वेद ७।३२।२६, सामवेद म० २५९ ऐन्द्र पर्व

हे (इन्द्र) परमेश्वर (पिता पुत्रेभ्यः यथा) जिस प्रकार पिता पुत्रों को ज्ञान प्रदान करता है इसी प्रकार तू (नः) हमें (क्रतुम् आभर) उत्तम ज्ञान और बुद्धि दे। हे (पुरुहूत) अनेक भक्तों द्वारा पुकारे गये प्रभो! (अस्मिन् यामनि) इस संसार-मार्ग में अथवा 'यमु-उपरमे चित्तवृत्तियों के निरोध के योगमार्ग में (नः शिक्ष) तू हमें शिक्षा दे, जिससे हम (जीवाः) जीव (ज्योतिः अशीमहि) ज्ञान-ज्योति वा ज्योतिःस्वरूप तुझको प्राप्त करें।

श्री सायणाचार्य ने सामवेद संहिता म० २५९ के भाष्य में इस मन्त्र का इतना उत्तम व्याख्यान किया है कि उसे उद्धृत करना उचित और आवश्यक प्रतीत होता है। निरुक्त के प्रमाण से इन्द्र का अर्थ परमात्मा करते हुए वे लिखते हैं—

एवं गुण विशिष्ट परमात्मन् ! त्वं (क्रतुम्) कर्म सर्वविषय ज्ञानं वा (नः) अस्मभ्यम् (आभर) आहर, प्रयच्छेत्यर्थः, तत्र दृष्टान्तः पिता पुत्रेभ्यां यथा लोके विद्यां धनं वा प्रयच्छति तथा (नः) अस्मभ्यं विद्यां धनं प्रयच्छ। हे (पुरुहूत) बहुभिराहूतेन्द्र ! (यामनि) सर्वः प्राप्तव्येऽस्मिन् प्रकृते ब्रह्मणि (जीवा वयं) (ज्योतिः) परं ज्योतिः (अशीमहि) सेवेमहि ॥

[श्री सायणाचार्यकृत सामवेद संहिताभाष्यं जीवानन्द वि० सा० सम्पादितं कलकत्ता पृ० १३७]

माधव ने अपने सामवेद भाष्य में भी—

त्वद्दत्तया च प्रज्ञया जीवाः—जीवन्तो वयं (ज्योतिः) ज्ञानम् (अशीमहि) प्राप्नुयामेत्यर्थः।

[सामवेद संहिता सभाष्या ऐड्यार पृ० १६०]

इस प्रकार लगभग उसी आशय का भाष्य किया है। मन्त्र के शब्द इतने अधिक स्पष्ट हैं और उनसे जीवों का परमेश्वर से भेद इतना अधिक व्यक्त है कि उससे कोईविद्वान् इन्कार कर ही नहीं सकता।

(६) ओ३म् क्रतो स्मर क्लिब स्मर कृतं स्मर।

यजु० अ० ४० का यह मन्त्र भी (जो ईशोपनिषत् में ज्यों का त्यों पाया जाता है) इस प्रसङ्ग में उल्लेखनीय है, जहाँ स्पष्ट है कि हे (क्रतो) कर्मशील जीव ! तू (ओ३म् स्मर) ओं पदवाच्य सर्वरक्षक परमेश्वर का स्मरण कर, (क्लिवे स्मर) शक्ति की प्राप्ति के लिए परमेश्वर का स्मरण कर और (कृतं स्मर) अपने किये हुए को याद कर—आत्मनिरीक्षण कर। यहाँ भी जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन है। ऐसे ही—

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥ यजु० ११।४॥

यो नो दाता स नः पिता महाँ उग्र ईशानकृत् । ऋ० ८।५२।५

यो भूतानामधिपतिर्यस्मिँल्लोका अधिश्रिताः । य ईशे महतो महान् तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम् ॥

यजु० २०।३२

सदसस्पतिमद्भुतंप्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषम् । यजु० ३२।१३

इत्यादि अनेकों मन्त्रों को जीवेश्वर भेद दिखाने के लिए उद्धृत किया जा सकता है ।

कुछ पाश्चात्य विद्वान और वैदिक एकेश्वरवाद

पाश्चात्य विद्वानों में से भी जो २ अपने को विकासवाद और ईसाइयत के पक्षपातपूर्ण मोह से ऊपर उठा चुके हैं उन्होंने वैदिक एकेश्वरवाद को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है । उदाहरणार्थ प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् चार्ल्सकोलमैन ने वैदिक ईश्वरवाद का निम्नलिखित सुन्दर तथा महत्वपूर्ण शब्दों में प्रतिपादन किया है—

"The Almighty, Infinite Eternal, incomprehensible, self existent Being. He who sees everything though never seen is Brahma—the One Un-known True Being, the Creator, Preserver and Destroyer of the universe. Under such and innumerable other definitions is the Deity acknowledged in the Vedas."

(Mythology of the Hindus by Charles Coleman)

इस उद्धरण का सारांश यह है कि वेदों में सर्वशक्तिमान, अनन्त, नित्य, अविज्ञेय, स्वयम्भू सर्वज्ञ, एक सृष्टि का कर्ता-धर्ता और संहर्ता माना गया है ।

कौन्ट जान्स जर्ना (Count Bjarnstjerne) नामक प्रसिद्ध विद्वान् ने Theogony of Hindus P. 53 में वेद मत्रों के उद्धरण देकर लिखा है —

"These ... Sublime ideas can not fail to convince us that the Vedas recognise only One God, who is Almighty, Infinite, Eternal, Self-existent, the Light and Lord of the universe."

अर्थात् इन उद्धरणों में प्रकाशित भावों से हम निश्चिततया इस परिणाम पर पहुँचे बिना नहीं रह सकते कि वेद एकेश्वरवाद का ही प्रतिपादन करते हैं जो ईश्वर सर्वशक्तिमान्, अनन्त, नित्य, स्वयम्भू और जगत् का प्रकाशक तथा स्वामी है।

जर्मन विद्वान् श्लीगल इत्यादि ने भी इसी भाव को "It can not be denied that the early Indians possessed a knowledge of true God."

(Wisdom of the Ancient Indians)

अर्थात् इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्राचीन आर्यों को सच्चे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त था—इत्यादि शब्दों में प्रकट किया।

एक पारसी विद्वान् का वैदिक एकेश्वरवाद विषयक लेख

फुर्दुन दादाचान् B. A., L L. B., D. Th. नामक पारसी विद्वान् ने Philosophy of zoroastrianism and comparative study of Raligions नामक उत्तम पुस्तक लिखी है। वे लिखते हैं—

"The Vedas teach nothing but Mono-theism of the purest kind."

अर्थात् वेद विशुद्ध एकेश्वरवाद की शिक्षा देते हैं।

एक मुसलमान विद्वान् का महत्वपूण लेख

ऐसा ही विचार सर यामिन खाँ नामक मुसलमान विद्वान् ने God, soul and nniverse in science and Islam, नामक पुस्तक में

प्रकट किया है। उसने स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के विषय में लिखा है कि—

"Swami Dayanand, a man of great learning began to preach the old religion of the Vedas which conceived unity of God." (P. 3)

अर्थात् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो वहुत बड़े विद्वान थे, पुराने वैदिक धर्म का प्रचार शुरू किया, जिसमें एकेश्वरवाद का प्रतिपादन था।

वैदिक धर्म का ईश्वर के विषय में यह सिद्धांत है कि वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, न्यायकारी, दयालु, जगत् का कर्त्ता, धर्ता और संहर्ता है। वह एक ही पूजनीय है। उसके अटल नियम भौतिक और नैतिक जगत् में कार्य कर रहे हैं, जिन्हें वेदों में ऋत और सत्य के नाम से पुकारा गया है।

आजकल विज्ञान का युग है। बहुत से लोग ऐसा समझते हैं कि वर्तमान विज्ञान ने जहां बहुत से अद्भुत आविष्कारों से संसार को चकित कर दिया, वहाँ उसने ईश्वरवाद को भी समाप्त कर दिया है। उनका ऐसा विश्वास है कि सभी बड़े वैज्ञानिक ईश्वरवाद के विरोधी थे, और उन्होंने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि इस संसार का कर्त्ता कोई नहीं; यह संसार अपने आप ही विकासवाद के नियमानुसार बनता और विगड़ता रहता है। कम्यूनिज्म के नाम से भी प्रायः अनीश्वरवाद का प्रचार रूस में तथा अन्यत्र किया जाता है, जिसका युवकों पर बहुत बुरा प्रभाव होता है और इससे उनके चरित्र भ्रष्ट होने की भी बहुत अधिक सम्भावना रहती है। अतः इस लेख में मैं वर्तमान विज्ञान के पिता के नाम से प्रसिद्ध सर आइजक न्यूटन और अन्य वैज्ञानिकों के ईश्वरवाद विषयक विचार शिक्षित जनता के सम्मुख रखना आवश्यक समझता हूं। आशा है हमारे देश के शिक्षित इन विचारों का प्रचार करके, दुर्भाग्य वश देश में फैलते हुए निरीश्वरवाद को दूर करने में सहायक होंगे।

सर न्यूटन का वक्तव्य :

सबसे पहले मैं वर्तमान विज्ञान के पिता के नाम से प्रसिद्ध सर आइजक न्यूटन के वाक्यों में स्पष्ट बताना चाहता हूँ कि वे पूर्ण ईश्वर-विश्वासी थे। उन्होंने अपने ज्योतिषशास्त्र विषयक् Principal नामक ग्रन्थ में लिखा था कि—

"All this material universe is the handwork of One Omniscient and Omnipotent Creator."

अर्थात् यह सारा भौतिक जगत् एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की रचना है।

उसके गुणों का वर्णन करते हुए सर न्यूटन ने लिखा—

"We are therefore to acknowledge One God, Infinite, Eternal, Omnipresent, Omnipotent the creator of all things, most wise, most just, most good, most holy."

(Quoted from 'The Metaphysical Foundations"

(Modern Science by Arthur Burtt S. T. M Ph. D. P. 282)

अर्थात् हमें एक ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना होगा, जो अनन्त नित्य, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान् सृष्टि कर्ता, सबसे अधिक न्यायकारी और सबसे अधिक पवित्र है।

इन शब्दों को पढ़ते हुए किसे आर्यसमाज के द्वितीय नियम का स्मरण नहीं होता, जो निम्न शब्दों में है—

परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

'Optick' नामक अपने ग्रन्थ में भी यह प्रश्न उठा कर कि—

"Whence is it that nature doth nothing in vain and

whence arises all that order and beauty which we see in the world."

अर्थात् क्या कारण है कि प्रकृति कोई कार्य व्यर्थ नहीं करती, और संसार में जो व्यवस्था और सौंदर्य देखते हैं, वे कहां से आते हैं इत्यादि।

इनका उत्तर देते हुए वैज्ञानिक शिरोमणि न्यूटन ने ठीक ही लिखा है—

"These things being rightly despatched does it not appear from phenomena that. there is Supreme Being incorporal living, intelligent, Omnipresent, who in infinite space sees the things themselves intimately and thoroughly, perceives them and comprehends them wholly by their immediate presence to himself."

(Opticks by Sir Newton; P. 344)

अर्थात् क्या इन विषयों को ठीक तौर पर समझने पर यह स्पष्ट नहीं प्रतीत होता कि एक निराकार चेतन, बुद्धिमान सर्वव्यापक है जो सब वस्तुओं को यथार्थ रूप में सम्पूर्णतया देखता और अन्तर्यामी रूप से ठीक-ठीक जानता है।

सर आलीवर लॉज का कथन

सर आलीवर लॉज अपने समय के सबसे बड़े वैज्ञानिक और रायल सोसायटी तथा British Association for the advancement of Science के प्रधान थे। उन्होंने एक निबन्ध में लिखा—

"We are deaf and dumb to the infinite grandeur around us unless we have insight to appreciate the whole and so to recognise in the woven fabric of existence, flowing steadily from the loom in an infinite progress towards per-

perfection the evergrowing garment of a transendent God."

(Is modern Intelligence out growing God ?
by V. T. Sunderland P. 197)

भावार्थ यह है कि हम अपने चारों ओर जो असीम सौन्दर्य पाते हैं, उसके विषय में बहरे और गूँगे रहते हैं जब तक कि हमारे अन्दर समस्त जगत् के महत्त्व को समझने और उसके अन्दर ओत प्रोत सर्वव्यापक परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की आन्तरिक दृष्टि व बुद्धि न हो।

लार्ड केल्विन की स्पष्टोक्ति—

लार्ड केल्विन ने जो १९ वीं सदी के एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, यह स्पष्ट घोषणा की थी कि—

"Science positively affirms creative Power. We are absolutely forced by Science to believe with perfect confidence in a Directive Power, in an influence other than physical or electrical forces."

(Quoted in 'Science and Religion' by Seven men of science. P. 48)

अर्थात् विज्ञान एक सृष्टिकर्ता की सत्ता का स्पष्ट रूप में प्रतिपादन करता है। हमें विज्ञान उस नियामक शक्ति ने पूर्ण विश्वास के लिए बाधित करता है, जो भौतिक और वैद्युतिक शक्तियों से भिन्न है। लुई पैश्चर नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक का प्रातःस्मरणीय वाक्य है—

Posterity will one day laugh at the foolishness of the modern materialistic philosophers. The more I study nature, the more I stand amazed at the works of the Creator.

अर्थात् आगे आने वाली सन्तति आधुनिक प्रकृति-वादी दार्श-

निकों की मूर्खता पर हँसेंगे । जितना अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूं उतना ही मैं परमेश्वर के कार्यों को देख कर आश्चर्य-चकित होता हूँ ।

थौमस ऐडिसन के ईश्वर सत्ता समर्थक उद्गार—

थौमस ऐडिसन नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और आविष्कारक ने लिखा था कि—

"Too many people have got a microscopic idea of the Creator. If they would only study His wonderful works as shown in nature herself and the natural laws of the Universe, they would have a much broader idea of the Great Engineer. Indeed I can almost prove His existence by chemistry. One thing is certain. The Universe is dominated by intelligence. I tell you, no person can be brought into close contact with the mysteries of the nature or make a tudy of Chemistry, without being convinced that behind all, there is Supreme Intelligence. I am convinced of that. I can perhaps, some time demonstrate the existence of such intelligence with the certainty of a demonstration in mathematics."

(Is Modern Intelligence outgrowing God by V. T. Sunderland)

अर्थात् बहुत से मनुष्यों को कर्त्ता के विषय में अणुमात्र ज्ञान है यदि वे प्रकृति और प्राकृतिक नियमों में उसके अद्भुत कार्यों का अनुशीलन करेंगे तो उन्हें उस महान् स्रष्टा (इंजीनियर) का अधिक विस्तृत ज्ञान हो सकेगा । वस्तुतः मैं रसायन-विज्ञान द्वारा उसकी सत्ता को सिद्ध कर सकता हूँ । एक बात निश्चित है कि विश्व में

बुद्धि व्याप्त है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि कोई व्यक्ति प्रकृति के रहस्यों और रसायन-शास्त्र का अध्ययन यह विश्वास धारण किये बिना नहीं कर सकता कि इन सबके पीछे एक (परमेश्वर की) सर्वोच्च शक्ति कार्य कर रही है। मैं इस बात को गणित के समान स्पष्टतया प्रदर्शित कर सकता हूँ, इत्यादि।

डा० मास्टरमैन, F. R. S., M. A., D. Sc., F. R. S. E. की उक्ति—

"The more we discover of his handiwork, the more we become assured of His existence." (The Religion of the Scientists, by Drawbridge, M. A., P. 121)

अर्थात् जितनी भी उस परमेश्वर की रचना की खोज करते हैं, उतना ही उसके अस्तित्व में हमारा विश्वास बढ़ता जाता है।

डा० मूर की महत्वपूर्ण धारणा—

डा० वी० मूर०, M. A., D. Sc., F. R. S. ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'The Origin and Nature of Life' के पृष्ठ २३ में लिखा है :—

"The ordered beauty of the world and nature suggests an infinite intelligence with powers of action such as no man or other creature possesses."

अर्थात् भौतिक जगत् का व्यवस्थापूर्ण सौंदर्य एक असीम बुद्धि का, जिसके साथ क्रिया शक्ति संयुक्त है, परिचय देता है; जो मनुष्य अथवा अन्य किसी प्राणी में नहीं है।

जगद्विख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन (Einstein) का लेख :—

"I believe in God who reveals Himself in the orderly harmony of the Universe. I believe that intelligence is

manifested throughout all nature. The basis of all scientific work is the conviction that the world is an ordered and comprehensive entity and not a thing of chance."

(Science and the Idea of God by W. M. Earnest Hacking)

अर्थात् मैं उस ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता हूँ, जो अपने को जगत् की व्यवस्थित समता के रूप में प्रकट कर रहा है। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि सारी प्रकृति के अन्दर एक बुद्धिमत्ता प्रकट हो रही है। सारे वैज्ञानिक कार्य का आधार यह विश्वास ही है कि संसार एक व्यवस्थित सर्वांगपूर्ण सत्ता है, न कि आकस्मिक वस्तु।

इसी प्रकार The Supreme intelligence in and above nature विषयक् भाषणदाता प्रो० फ्लेमिंग, M. A., D. Sc., F. R. S. (जिनका अत्यन्त महत्वपूर्ण ईश्वर सत्ता का प्रबल समर्थक भाषण 'Science and Religion by seven Men of Science, P. 58 में छपा है) Human Destiny के लेखक मोयल कौमुटे तथा अन्य अनेक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के ईश्वरवाद-समर्थक उद्धरणों को दिया जा सकता है, किन्तु लेख-विस्तार भय से ऐसा करना सम्भव नहीं। कहीं यह न समझा जाए कि कुछ थोड़े से वैज्ञानिकों का ऐसा मत इसलिए अन्त में डा० पाल कैरस कृत सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The religion of Science' अर्थात् विज्ञान का धर्म' से यह उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है :—

"The Religion of Science is not atheistic, but theistic. God determines the laws of any possible kind of nature. God is that which determines the shape of nature and directs the course of energy."

(The Religion of Science by Dr Paul Carus.)

अर्थात् विज्ञान का धर्म नास्तिक वा निरीश्वरवादी नहीं, अपितु ईश्वरवादी है। परमेश्वर प्रकृति के नियमों और रूप का नियामक है, और वही शक्ति के प्रकार का प्रेरक है।

जो वैज्ञानिक भौतिक विकासवाद को मानते हैं, वे भी अब प्राय: ईश्वर की सत्ता से इन्कार नहीं करते, बल्कि हेनरी ड्रुमण्ड नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के शब्दों में कहते हैं कि 'Evolution shows God everywhere' (Is modern Inteligence outgrowing God P. 200) अर्थात् 'विकास सर्वत्र ईश्वर को प्रदर्शित वा सिद्ध करता है।' अत: वैज्ञानिकों का विरोध मनुष्य के शरीर धारी सीमित, अल्पज्ञ ईश्वर की कल्पना (Anthropomorphism) से है, न कि वैदिक ईश्वरवाद से।

प्रो० फ्लेमिंग M. A. D. Sc., F. R S. ने The Supreme Intelligence in and above nature. (प्रकृति के अन्दर और ऊपर सर्वज्ञ की सत्ता) नवम्बर १९१४ ईस्वी में लण्दन में मनाये विज्ञान सप्ताह (Science week) में युक्तियुक्त व्याख्यान देते हुए उपसंहार इन महत्वपूर्ण शब्दों में किया—

'What Science Yields !

"We can say that scientific study most certainly shows us the presence in this physical universe of an order, stability, Directive Power and intelligibility. These qualities are not spontaneously produced. They do not come by choice. This universe is not merely a thing. It is a thought and thought implies and necessitates a thinker. Hence there is in this Universe a Supreme. Thinker or Intelligence of which our own intelligence is but a faint copy." ("Science and Religion by Seven men of Sciencc." P. 48)

अर्थात् विज्ञान हमें क्या बतलाता है ? हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक अनुशीलनपूर्ण निश्चय के साथ इस भौतिक संसार में क्रम व व्यवस्था, स्थिरता, संचालक शक्ति और बुद्धिगम्यता को प्रदर्शित करता है। वे गुण स्वयं नहीं आ सकते। वे स्वयं चुनाव या पसन्द द्वारा भी नहीं आते। यह संसार एक विचार का परिणाम है। इस लिये संसार में एक सर्वोत्कृष्ट महान् विचारक व बुद्धिमान् है जिसके सामने हमारी अपनी बुद्धि एक अस्पष्ट छाया सी है।

कितने स्पष्ट शब्दों में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० फ्लेमिंग ने विज्ञान द्वारा ईश्वर के अस्तित्व का समर्थन किया है। पाठक इतने से ही समझ सकते हैं।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो०क्रेसी मौरीसन ने जो न्यूयार्क ऐकेदमी ऑफ साइन्स (बिज्ञान संस्थान) के अध्यक्ष थे, रीडर्स डाइजेस्ट (Reader's Digest) नामक मासिक पत्रिका के लिये जिसकी १३ भाषाओं में प्रतिमास २० करोड़ के लगभग प्रतियाँ विकती हैं। "Seven Reasons why a Scientist Believes in God" अर्थात् ७ कारण कि क्यों एक वैज्ञानिक ईश्वर में विश्वास करता है, लिखा था, जो प्रथम बार रीडर्स डाइजेस्ट के जनवरी १९४८ के अङ्क में प्रकाशित हुआ था। औक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में गणित शास्त्र के प्रोफेसर कौल्सन F. R. S. आदि के विशेष अनुरोध से उसे रीडर्स डाइजेस्ट के नवम्बर १९६० के अङ्क में पुनः प्रकाशित किया गया था। इस महत्वपूर्ण लेख का प्रारम्भिक परिच्छेद निम्नलिखित है:—

"We are still in the dawn of the scientific age and every increase of light reveals more brightly the handiwork of an intelligent creator. In the 90 years since Darwin, we have made stupendous discoveries, with a spirit of scientific humility and of faith grounded in knowledge.

(Seven Reasons why a Scientist Believes in God by A. Cressy Morrisson Former President of the New York Academy of Sciences Reader's Digest Nov. 1960)

अर्थात् हम अभी वैज्ञानिक युग की उषा में हैं। और प्रत्येक प्रकाश वा ज्ञान की वृद्धि एक बुद्धिमान् जगत्कर्ता की कृति को और अधिक स्पष्टता से प्रगट करती है। डार्विन के पश्चात् के इन ९० वर्षों में हमने महत्वपूर्ण आविष्कार किये हैं। वैज्ञानिक नम्रता और विश्वास की भावना के साथ जो ज्ञान पर आधारित हो, हम ईश्वर की सत्ता की अनुभूति के अधिकाधिक समीप पहुँच रहे हैं। इसके पश्चात् उन्होंने ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिये ७ प्रबल कारणों का निर्देश किया है जिनका हम विस्तार भय से अभी उल्लेख नहीं कर सकते।

चार्ल्स ईलियट (Charles Eliot) नामक मनोषी वैज्ञानिक ने लिखा है:—

"The evidence is overwhelmin that there exisis an eternal energy, which is intelligent and purposeful and which inspires the whole creation instant o time and throughout the infinite space."

अर्थात् इस बात की प्रबल साक्षी विद्यमान है कि एक सनातन नित्य शक्ति विद्यमान है जो बुद्धिपूर्ण और प्रयोजन-शालिनी है। और जो सारे संसार के सर्वकाल में स्फूर्ति दायिनी है।

करोलस लिनो (Corollus linnaues) नामक वनस्पति शास्त्रज्ञ वैज्ञानिक ने स्पष्ट घोषणा की है। :—

"In my scientific studies of the plant world. I see God every where."

अर्थात् मैं वनस्पति जगत् वे वैज्ञानिक अनुशीलन में सर्वत्र परमात्मा के दर्शन करता हूँ।"

सर आर्थर एडिंगटन नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ज्योतिषी ने जो कुछ लिखा, उसका साराँश है—"वर्तमान विज्ञान को १६ वीं शताब्दी के उस भौतिकवाद और भाग्यवाद का परित्याग करना पड़ेगा। जो कहता था कि संसार की व्याख्या केवल यन्त्रवत् व्याख्या से हो सकती है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा और मन से है और उसे हिलाया नहीं जा सकता।"

रौबर्ट मिल्लिकान (Robert millikan) नामक वैज्ञानिक ने लिखा है कि—"God is the unifying principal of the universe."

अर्थात् परमेश्वर संसार का मिलाने वाला (संयोजक) सञ्चालक वा नियामक तत्व है।

यह बात यहाँ स्मरणीय है कि जिन वैज्ञानिकों ने ईश्वरवाद का खण्डन किया है। उन्होंने बाइबिल, पुराण आदि में वर्णित मनुष्यवत् ईश्वर-कल्पना (कल्पित ईश्वर) का निराकरण किया है, न कि ईश्वर की सत्ता मात्र का। उदाहरणार्थ श्री सी० एस० मिाडल मेन F. R. S. I. E. नामक वैज्ञानिक ने बाइबिल में में प्रतिपादित ईश्वर की मानव वत् कल्पना के विषय में लिखा है—

"Such anthropomorphism is childish."

ईश्वर की ऐसी मानववत् कल्पना बच्चों का खेल है।

इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या विज्ञान साकार ईश्वर के विचार का खण्डन करता है। प्रो० V. D. Kohni F. R. S. D. Sc. LLD. F. C. S. नामक वैज्ञानिक ने उत्तर दिया। :—

"I think it does assuming the personal God to have human attitude.

अर्थात् मेरे विचार में विज्ञान साकार ईश्वरवाद का निराकरण करता है। यदि उसका अर्थ यह है कि ईश्वर मनुष्य के समान

(राग-द्वेष, सुख-दुःखादियुक्त) है। इसी प्रकार का उत्तर देते हुए उस समय न्यूजीलेण्ड युनिवर्सिटी के कौण्टर्करी कालेज के प्रो० C S. फादर F. R. S., D. Sc.—भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर ने लिखा—
"The idea of a Personal God as thought by Jesus Christ would seem to be very different from the conception of Scientif.c men. I see no realisation of the stipendous significance which must be to the power behind the universe in Jesus's teachings of the church to day."

अर्थात् ईसामसीह ने ईश्वर के व्यक्तित्व विषयक् जो विचार दिया वह वैज्ञानिकों के विचार से सर्वथा भिन्न है। मुझे ईसामसीह और वर्तमान चर्च की शिक्षाओं में 'जगत के पीछे काम कर रही उस महाशक्ति के अत्यधिक महत्व का अनुभव नहीं प्रतीत होता।"

ऐसे ही अन्य अनेक वैज्ञानिकों ने बाइबिल इत्यादि में प्रतिपादित साकार, ससीम ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान् जगत्कर्त्ता परमेश्वर की सत्ता मात्र से नहीं।

कई लोग यह समझते हैं क्योंकि अनेक वैज्ञानिक (सब नहीं) विकासवाद को मानते हैं अतः वे ईश्वरवाद से इन्कार करते हैं, वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या आपके विचार में विकासवाद में विश्वास जगत् कर्तृत्व में विश्वास का सर्वथा विरोधी है, एक रसायन शाला के प्रोफेसर ने उत्तर दिया—"यदि ईश्वर से तात्पर्य बाइबिल के जेनेसिस (Genesis) में प्रतिपादित साकार ईश्वर के व्यक्तित्व से न होकर सारे जगत् को बनाने वाली कर्तृ शक्ति से हो तो इसका विकासवाद से कोई बिरोध नहीं, बल्कि ठीक इससे विरोधी बात है।

इसी विचार का समर्थन करते हुए हेनरी ड्रमण्ड नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने लिखा है—"Evolution shows God every where." अर्थात् विकास सर्वत्र ईश्वर को दिखाता है।
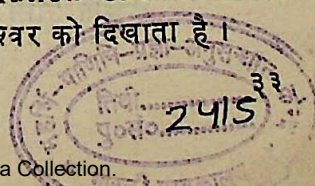
अतः यह विचार भी अशुद्ध है कि कुछ वैज्ञानिक जो विकासवाद को मानते हैं वे सभी अनीश्वरवादी वा नास्तिक हैं।

वस्तुतः आर्यसमाज के द्वितीय नियम में प्रतिपादित ईश्वरवाद विज्ञान और तर्क सम्मत है, जिसमें ईश्वर का निरूपण इस प्रकार किया गया है—

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसीकी उपासना करना योग्य है।

हर्ष का विषय है कि विज्ञान अब तेजी से वैदिक ईश्वरवाद को समर्थन दे रहा है। वह समय दूर नहीं है जब विज्ञान और ईश्वरवाद का सुखद समन्वय 'वैदिक ईश्वरवाद' के महत्व का डिण्डिम घोष करता हुआ मानव की सुख-शान्ति के अजस्र स्रोतों को खोल देगा।

ऋषि दयानन्द का पुण्य प्रताप

ऋषिराज ! तेज तेरा चहुं ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है॥
कह जङ्गली जनों के हा ! गीत, वेद छोड़े।
भण्डार ज्ञान का अब उनमें दिखा रहा है।
सिद्धान्त वेद के ही सब सिद्ध हो रहे हैं।
घर-घर दिखाता आनन्द आ रहा है॥
परदेश से विमुख हो जड़ वाद में पड़ा था।
अध्यात्मवाद से ही वह शान्ति पा रहा है॥
भौतिक विकास बट पर करते थे प्रभु-अवज्ञा।
है विश्व का रचयिता विज्ञान गा रहा है॥
वेदोक्त धर्म का ही डङ्का बजेगा जग में।
सङ्गीत 'सोम' स्वर से सबको सुना रहा है॥
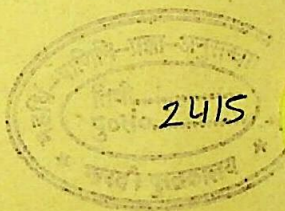
'तपोभूमि मासिक मथुरा] [रजि

शारीरिक आत्मिक औ

कल्याण की सा

(वैदिक परिवारों में सर्वाधिक

शरीर मन और आत्मा को उन्नत करने वाले, महिलाओं, और बालोपयोगी सामग्री से सज्जित, कविता कहानी, एकाँकी लघु कथा और विवेचनात्मक लेखों से युक्त—

इस सात्विक प्रकाश को अपने परिवारों में प्रवेश कराइये।

वार्षिक मूल्य ८) रु० मात्र तथा—

५०० पृष्ठों के वृहद् विशेषाङ्क सहित होता शुल्क १२) रु० मात्र।

द्रष्टव्य—होता सदस्यों को जो १२) रु० वार्षिक या १२५)रु एक बार देने पर बन सकते हैं, विशेषांक सहित तपोभूमि के अतिरिक्त सत्य प्रकाशन के प्रकाशनों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा तथा वे प्रकाशन समिति के सदस्य माने जायेंगे।

'तपोभूमि के वृहद् विशेषांक'—'शुद्ध रामायण' 'शुद्ध कृष्णायन' 'शुद्ध मनुस्मृति' 'शुद्ध गीता', 'शुद्ध हनुमच्चरित', 'शुद्ध तुलसी रामायण' शुद्ध वृहदारण्यक, उपनिषद् प्रकाश आदि की सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है।

सब प्रकार के वैदिक साहित्य मिलने का पता—

सत्य प्रकाशन, मथुरा।

वैदिक प्रेस, मथुरा।